INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC INFORMATION
www.jsiinternational.com Research Article ISSN: 2583-8512

संगीत एवं अन्य ललित कलाओं के बीच सामंजस्य

तनु चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्रदर्शन और ललित कला विभाग
सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ पंजाब, बठिंडा

Article Received on: 11/10/25; Revised on: 19/10/25; Approved for publication: 11/11/25

Keywords कला, ललित कला, संगीत, सौंदर्य, अनुभूति।

How to Cite this Article:

तनु चौधरी. संगीत एवं अन्य ललित कलाओं के बीच सामंजस्य, J. Sci. Info. 2025; 3 (8): 61-65

Abstract मनुष्य उलझी हुई अनेक भावनाओं का एक अस्पष्ट समूह है। अपनी इन्हीं भावनाओं एवं संवेदनाओं के कारण वह अपने लिए एक पहेली–सा बन गया है। उसकी ये भावनायें किन्हीं किन्हीं हृदय स्थलों पर जब विकल होकर इस पहेली को सुलझाने का प्रयास करने लगती हैं, उस समय उसका आंतरिक और ब्राह्मात्मक शरीर पारे के सदृश विकल होता है और इस पहेली को नूतन रूप दे डालता है। पहेली, पहेली न रहकर कला आवरण ओढ़ लेती है। दूसरे शब्दों में आनंद या विपत्ति का अत्यधिक प्रभाव हृदय की मनोवृत्तियों को कभी–कभी ऐसी स्थिति में परिवर्तित कर देती है कि मनुष्य अपना अस्तित्व भूल जाता है। उसके सम्मुख केवल अनुभूति ही रह जाती है। मनुष्य के जीते जागते रूप का विशुद्ध अनुभूति में समन्वय हो जाता है। इस अवस्था में उससे रहा जाता नहीं। वह व्याकुल हो जाता है। उसका हृदय फूट पड़ता है। मानव की इस अनुभूति की अभिव्यक्ति को ही हम 'कला' कह सकते है और जिन कलाओं में ललित्य का अंग विद्यमान रहता है, वे ललित कलाएँ है। ललित कलाओं का उद्देश्य सौन्दर्यनुभूति के विषय क्षेत्र का सृजन करना है। ललित कलाओं का विभाजन कुछ विशिष्ट कलाओं के आधार पर किया गया है चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला काव्यकला एवं संगीतकला। सभी ललित कलाओ का क्षेत्र विशाल व विस्तृत है। सभी कलाओ में संगीत हीं सबसे अधिक सूक्ष्म एवं भाव प्रधान विशेषताओं से अलंकृत है । संगीत का संबंध सभी कलाओं से है। समस्त कलाओं के गुण एवं लक्षण समान होते है क्योंकि सभी ललित कलाओं का लक्ष्य एक ही है।

भूमिका:

मानव सभ्यता के आरंभ से ही सौंदर्य के प्रति मनुष्य का आकर्षण रहा है, जिसने कला के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया। कला, मानव की आंतरिक सौंदर्य भावना और भावों की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण

माध्यम रही है। यह न केवल प्रकृति से प्रेरित होती है, बल्कि मानव के विचारों भावनाओं और अनुभवों की भी मूर्त रूप प्रदान करती है। कला को मानव चेतना और उसकी सृजनात्मक विधाओं का परिमाण माना जा सकता है। कला मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है, जो सौंदर्य भावना से उत्पन्न होती है और विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन बनती है। यह व्यक्ति की सृजनात्मकता का मूर्त रूप है। जिसकी व्याख्या सौंदर्य की व्यक्तिपरक धारणाओं पर आधारित है।

कला शब्द का भारतीय साहित्य में एक प्राचीन और समृद्ध इतिहास रहा है। इसकी व्युत्पति 'कल' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'सुंदर' है। इसके साथ ही, 'ला' धातु का प्रयोग 'प्राप्त करना' के अर्थ में होता है। इस प्रकार, 'कला' का शाब्दिक अर्थ 'सुंदर को प्राप्त करना' है। यह मानवीय गतिविधि जिसमें अवलोकन, चिंतन और स्पष्ट अभिव्यक्ति शामिल है 'कला' के रूप में परिभाषित होती है। इसके पर्यायवाची शब्दों में 'शिल्प' 'कौशल' और 'आर्ट' का प्रयोग भी होता है। प्राचीन भारतीय आचार्यों और विद्वानों ने कला की परिभाषा को अत्यंत विस्तृत रखा, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया। उन्होंने अपने–अपने दृष्टिकोण से इन कलाओं की सूचियाँ तैयार की तथापि अधिकांश विद्वानों की सहमति 64 प्रमुख कलाओं पर रही।

इन 64 कलाओं के अतिरिक्त विद्वानों ने 5 ललित कलाएं मानी है। ललित कलाएं कलाओं का एक विशेष विभाजन है जिसके अंतर्गत कुछ चुनी हुई कलाएं रखी गई हैं। जैसे संगीतकला, काव्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला तथा वास्तुकला। ललित संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ है, प्रिय, सुंदर, मनोहर आदि। अतः जो कला यह गुण रखती है वह ललित कला कहलाती है। ललित कला का मूल उद्देश्य आत्मानन्द है। जीवन की भूख–प्यास आदि मूल आवश्यकताओं के साथ–साथ मानव की कुछ आत्मिक और मानसिक भूख भी रहती है। जिसकी तृप्ति के लिए ललित कलाओं का सृजन किया गया है। यही सृजन अथवा रचना, कला है, जो आत्मिक सुख के साथ–साथ मानव को एक दिशा निर्देश भी देती है। ललित कलाओं को 'मनस्तत्व' कहा गया है अर्थात् 'मानसिक आनंद' देना। यह सौंदर्य को मूर्त रूप देती है। पाश्चात्य चिन्तन में ललित कला के लिए 'फाइन आर्ट' शब्द का प्रयोग किया गया है। ललित कलाओं को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। जैसे दृश्य कला, श्रव्य कला, मिश्रित कला आदि। दृश्य कलाओं का अनुभव आंखों के माध्यम से होता है जैसे चित्रकला, मूर्तिकला। श्रव्य कला का अनुभव कानों के द्वारा होता है जैसे संगीत काव्य आदि। मिश्रित कला वह कलायें है जिनके अनुभव करने में एक से अधिक इन्द्रियों की आवश्यकता होती है जैसे काव्य, नृत्य, नाटक आदि।

संगीत का अन्य ललित कलाओं से संबंधः जिस प्रकार एक पिता के पुत्रों में भिन्नता होते हुए भी कुछ–न–कुछ समानता अवश्य पायी जाती है, उसी प्रकार ललित कलाओं की श्रेणी में होने के कारण, सभी कलायें

किसी–न–किसी रूप में संगीत से संबंध रखती है। हां, यह अवश्य है कि, कोई संगीत के अधिक समीप है तथा कोई कम। संगीत का अन्य ललित कलाओं से प्रत्यक्ष रूप से संबंध इस प्रकार समझा जा सकता हैः–

'काव्य' व 'संगीत' कला :

संगीत और काव्य दोनों ही कलाओं में 'अलंकार' का प्रयोग होता है। यद्यपि काव्य में साहित्यिक अलंकार और 'संगीत' में सांगीतिक, अलंकार का प्रयोग होता है। काव्य कला का आधार शब्द और संगीत का आधार स्वर परस्पर दोनों में गहरा सम्बंध है। बिना शब्द के सहारे स्वरोच्चारण असंभव ही है। संगीत और काव्य इन दोनों की अभिव्यक्ति के माध्यमों की उत्पति स्थान एक ही है। 'नाद' का ही प्रतीकात्मक रूप 'शब्द' है। 'शब्द' और 'स्वर' दोनों का ही उत्पति स्थान नाद है। दोनों ही नादमय हैं। दोनों की कलाओं में लय, गति व एक प्रकार का प्रवाह होता है। 'सौंदर्य, रस व भाव' संगीत और कला दोनों कलाओं के वांछित लक्षण है। काव्य और संगीत दोनों ही कलाओं में कल्पनात्मक विहार का बहुत महत्व है अर्थात् एक संगीतकार और एक कवि दोनों की कल्पना का क्षेत्र विस्तृत होना आवश्यक है। संगीत में ख्याल, ध्रुपद–धमार की बंदिशों में भी काव्य विद्यमान रहता है जिनके द्वारा हमें भावाभिव्यक्ति में सहायता मिलती है। संगीत और काव्य दोनों कलाओं को 'श्रव्य कला' के अंतर्गत रखा जा सकता है। काव्य शब्दों के रूप में संगीत है और संगीत स्वर के रूप में कविता। मुगलकालीन भारत में जब चारों ओर से अत्याचार का उफान आया था उस समय भी हमारे देश के महासन्तों ने काव्य व संगीत के माध्यम से भक्ति, ज्ञान, धर्म आदि की शिक्षा देकर भारतीय समाज को जीवन दान दिया।

संगीत व स्थापत्य कलाः

'हीगेल' ने स्थापत्य कला को 'फ्रोजन म्यूजिक' कहा है। इसी आधार पर संगीत को 'फलोइंग आर्किटेक्चर' कह सकते हैं। स्थापत्य कला में संतुलन, परस्पर संयोजन तथा विनियुक्त उपादानों का घनत्व होता है। संगीत में भी स्वर संतुलन परस्पराश्रित स्वर संयोजन, स्वर संवाद आदि की घनता रहती है। जिस प्रकार भवन निर्माण के पूर्व उसका नक्शा कागज पर खींच लिया जाता है। उसी प्रकार संगीत में भी कलाकार संयोजन का सहारा लेकर कला की अभिव्यक्ति करता है। भवनों के निर्माण में डिजाइन की दृष्टि से जिस प्रकार हमें एकरूपता देखने को मिलती है तथा उसमें सम्मिलित हर एक वस्तु विशेष का अपना अपना निर्दिष्ट स्थान होता है, आकार होता है, उसी रूप से वह अच्छी लगती है। इसी प्रकार संगीत में भी हमें स्वरों की समानता देखने को मिलती है। दोनों ही कलायें कल्पना से परिपूर्ण हैं। संगीत वह शिल्प है जिसकी नींव शास्त्र पर आधारित है और ऊपर की नक्काशी कला द्वारा की जाती है। संगीत स्वर के प्रवाह से संबंध रखता है। वर्तमान समय में विभिन्न सभागारों के निर्माण में यह ध्यान रखा जाता है कि उसकी छत दीवार आदि ऐसे हो ताकि स्वर का प्रवाह भली भांति हो सके। पुराने समय के महलों में जहाँ गायन–वादन के

कार्यक्रम होते थे उनका स्थापत्य भी ऐसा होता था कि अधिक से अधिक लोग संगीत सुन सके और कलाकार को परिश्रम भी ना करना पड़े। अतः इस प्रकार संगीत और स्थापत्य कला एक दूसरे के पूरक हैं।

संगीत व मूर्तिकलाः– वास्तुकला से अब हम मूर्ति कला की ओर बढ़ते हैं तो हम पाते हैं कि प्राचीन कला से ही संगीत तथा धर्म का घनिष्ट संबंध स्वीकार किया गया है। देवालयों में मूर्तियों के समक्ष बैठकर गायक अपनी कला द्वारा भगवान की आराधना करता आ रहा है। इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से देखा जाये जो संगीत व मूर्ति कला का आपसी संबंध बहुत अंशों में है। इस कला में उतने ही धैर्य की व साधना की आवश्यकता होती है जितनी एक संगीत साधक को अपने स्वर परिष्कृत करने में होती है। दूसरी और जिस प्रकार संगीतकार अपनी रचना को अनेक अलंकरणों द्वारा यानि गमक मुर्की, मींड, कण आदि द्वारा आभूषित करता है। उसी प्रकार मूर्तिकार भी अपनी मूर्ति के निर्माण में कई प्रकार के अलंकरणों का सहारा लेता है और इन्हीं के द्वारा वह मूर्ति को संजीव रूप दे पाता है। मूर्तिकला भी संगीत के समान भावनाओं की ही अभिव्यक्ति है। इसमें संगीत के समान भावनाओं की ही अभिव्यक्ति है। इसमें संगीत के समान गतिमयता, लयबद्धता, एकरूपता आदि गुण पाये जाते हैं। संगीत के नृत्य पक्ष का प्रभाव मूर्तियों पर स्पष्ट दिखता है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 'नटराज' की प्रतिक्षा है। जिसमें नृत्य तल को व्यापक एवं गंभीर दार्शनिकता के साथ दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त दक्षिण के अनेक मंदिरों गुफाओं में उत्कीर्ण प्रतिमाओं के बीच नृत्य मुद्राओं के अतिरिक्त कई प्रकार के वाद्य भी देखने को मिलते हैं।

संगीत व चित्रकलाः

भारतीय चित्रकला साहित्य के अंतर्गत 'रागमाला' चित्रों के द्वारा राग–रागिनियों का चित्रात्मक दर्शन मिलता है। जिसमें राग–रागिनियों से संबंधित वातावरण दृश्य, रस, काल, भाव आदि का ऐसा व्यंजक चित्र रहता है कि चित्र को देखने मात्र से राग की प्रवृत्ति, रस, समय आदि का अनुमान लगाना संभव हो जाता है। चित्रकला और संगीतकला के अंतसबंध का यह श्रेष्ठतम उदाहरण है। जिस प्रकार चित्रकार अपने चित्रों में प्राकृतिक सुषमा तथा उसके सौन्दर्यमयी तत्वों का दिग्दर्शन करता है। उसी प्रकार संगीतकार की चीजों में आकृतिक सुषमा का वर्णन अधिकांश देखने को मिलता है। संगीत कला जिन दृश्य–अदृश्य सूक्ष्मताओं और भावों को स्वर लय आदि से प्रकट करता है उन्हें चित्रकला रंग–रेखाओं द्वारा व्यक्त करता है। चित्रकला में कई बार प्रत्यक्ष चित्र व उसके अंदर निहित संदेश एक दुसरे से बिल्कुल तारतम्य नहीं रखते अर्थात् सौंदर्यात्मक दृष्टि से देखने पर ही उसका वास्तविक अर्थ समझा जा सकता है। संगीत में भी भजनों, बंदिशों आदि के शब्द और उनके अर्थ एक दूसरे से काफी भिन्न होते हैं। तात्पर्य यह है कि दोनों ही कलाएं गूढ़ विषयों का प्रतिपादन करती है। दोनों ही कलाएं कल्पना प्रधान होती है। क्योंकि दोनों ही अव्यक्त को व्यक्त और अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करती है।

निष्कर्ष :– सभी ललित कलाओं का मूल उद्देश्य, मानवीय भावनाओं, विचारों और अनुभवों को सौंदर्यपूर्ण ढंग से व्यक्त करना है, भले ही उनके माध्यम भिन्न हो उपरोक्त सभी कलाओं में लयात्मक प्रवाह, ओज, सौंदर्य, माधुर्य दिखता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि संगीत का अन्य ललित कलाओं से घनिष्ट संबंध है।

संदर्भः

1. बसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस, संस्करण, 2019
2. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, निबंध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, संस्करण, 2012
3. शर्मा स्वतंत्र, भारतीय संगीत : वैज्ञानिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, संस्करण–2019
4. शर्मा स्वतंत्र, सौन्दर्य, रस एवं संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद संस्करण, 2015
5. कुलकर्णी वसुधा, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, राजस्थान, संस्करण–2013
6. तिवारी किरण, संगीत एवं मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण, 2019
7. जोशी उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, मानसरोवर प्रकाशन महल, फिरोजाबाद, उतर प्रदेश, संस्करण, 1957